

सूरह बुरूज^[1] - 85

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 22 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयतों में बुर्जों (राशि चक्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 3 तक प्रतिफल के दिन के होने का दावा किया गया है।
- आयत 4 से 11 तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अत्याचार करते हैं कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये हैं। और जो इस अत्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत 16 तक अत्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत 17 से 20 तक अत्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में हैं।
- अन्त में कुर्आन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई बात असत्य नहीं हो सकती।

1 यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास ज़ोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलासा दिया जा रहा है, और दूसरी ओर काफ़िरों को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये "अस्हाबे उख़्दूद" (खाईयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।

दक्षिणी अरब में नजरान, जहाँ ईसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से "जू-नवास" यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गढ़ों में नर नारियों तथा बच्चों को फिकवा दिया जिस के बदले 525 ई० में हब्शआ के ईसाईयों ने यमन पर अक्रमण कर के "जू-नवास" तथा उस के हिम्यरी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पुष्टि "गुराब" के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषज्ञों को मिला है। (तर्जुमानुल कुर्आन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की!
2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया!
3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्षय देगा!
4. खाईयों वालों का नाश हो गया!^[1]
5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।
6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।
7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।
8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।
9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝

وَشَهِيدٍ وَشَهُودٍ ۝

مِثْلَ أَصْحَابِ الْأُخْدُودِ ۝

النَّارِ ذَاتِ الْوُكُودِ ۝

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝

وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ۝

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ

1 (1-4) इन में तीन चीजों की शपथ ली गई है:

(1) बुर्जों वाले आकाश की,

(2) प्रलय की, जिस का वचन दिया गया है,

(3) प्रलय के भ्यावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।

प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ से यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?

दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अत्याचार करना चाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है, जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अत्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अत्यचारियों ने बिबश आस्तिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

10. जिन्होंने ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ لَعَلَّكُمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمُ وَلَهُمْ عَذَابٌ الْحَرِيقُ ۝

11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन के तले नहरें बह रही हैं और यही बड़ी सफलता है।^[1]

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝

14. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ ۝

15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

16. वह जो चाहे करता है।^[2]

فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

1 (5-11) इन आयतों में जो आस्तिक सताये गये उन के लिये सहायता का वचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थित रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्होंने ने उन को सताया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के सत्य को नहीं माना।

2 (12-16) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।

कुर्आन ने इस कुविचार का खण्डन किया है कि अल्लाह, पापों को क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों से भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुविचार उस समय सहीह हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ

- | | |
|---|---------------------------------------|
| 17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओ की सूचना मिली? | هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ |
| 18. फिरऔन तथा समूद की ^[1] | فِرْعَوْنَ وَنَمُودَ |
| 19. बल्कि काफिर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं। | بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ |
| 20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है। ^[2] | وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ |
| 21. बल्कि वह गौरव वाला कुर्आन है। | بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ |
| 22. जो लेख पत्र (लौहे महफूज़) में सुरक्षित है। ^[3] | فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ |

है, वह जानता है कि किस के मन में क्या है? फिर "तौबा" इस का नाम नहीं कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किस के मन में क्या है?

- (17-18) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जातियों की ओर संकेत है, जिन का सविस्तार वर्णन कुर्आन की अनेक सूरतों में आया है। जिन्होंने आस्तिकों पर अत्यचार किये जैसे मक्का के कुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जातियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चेत थे।
- (19-20) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में कुर्आन को नहीं मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नहीं, और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही है।
- (21-22) इन आयतों में बताया गया है कि यह कुर्आन कविता और ज्योतिष नहीं है जैसा कि वह सोचते हैं, यह श्रेष्ठ और उच्चतम् अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम "लौहे महफूज़" में सुरक्षित है।